अनुसन्धान **(**श्रीमति**.** मीरा ताडिपत्रि**)**

[बृ**.**उप**,** अव्याकृत ब्राह्मण**]**

मन व-चन का -- यक प्र-दक्षिणे ।
अनुदि-नदि स -- र्वत्र- व्यापक ।
वनरु-ह्येक्षण -- गर्पि-सुत मो -- दिसुत-लिरु सत-त ।
अनुभ-वके तं -- दुको स-कल सा- ।
धनग-ळोळगिदु -- मुख्य- पामर- ।
मनुज-रिगे पे -- ळिदरे- तिळियदु -- बुधरि-गल्लद-ले ॥५.१६
॥

भगवान्॥

आत्म **[**बृ**.**उप**,** अव्याकृत ब्राह्मण**]**

विधि भ-वादि स -- मस्त- जीवर ।
हृदय-दोळगे -- कात्म-नेनिसुव ।
पदुम-नाभनु -- अच्यु-तानं -- तादि- रूपद-लि ॥
अधि सु-भूता -- ध्यात्म- अधिदै- ।
वदोळु- करेसुव -- प्राण-नागा- ।
भिदनु- दश रू -- पदलि- दशविध- प्राण-रोळगि-द्दु
॥पन्चमहायज्ञ ९ ॥

२**.**नित्यानुसन्धन क्रम **:**
<u>उदयकाल दिक् नमस्कार **[**षट्प्रष्न उप**.]**</u>

वास-वानुज -- रेणु-कात्मज ।
दाश-रथि वृजि -- नार्द-नमल ज- ।
लाश-यालय -- हयव-दन श्री -- कपिल- नरसिं-ह ॥
ईसु- रूपद -- लवर-वर सं- ।
तॊष-बडिसुत -- नित्य- सुखमय ।
वास-वागिह -- हृत्क-मलदोळु -- बिंब-नेंदेनि-सि ॥ ९..२१ ॥

<u>उदयकाल प्रवृत्ति [बृ.उप]</u>

आरु- मूरेर -- डोंदु-साविर ।
मूरे-रडु शत -- श्वास- जपगळ ।
मूरु-विध जी -- वरोळ-गब्जज -- कल्प- परियंत ॥
ता र-चिसि सा -- त्वरिगे-सुख सं- ।
सार- मिश्ररि -- गधम- जनरिग- ।
पार- दुःखग -- ळीव-गुरु पव -- मान- सलहे-म्म ॥ १.. ४ ॥

<u>दॆह पोषण</u>

मात-रिश्वनु -- दॆह-रथदोळु ।
सूत-नागिह -- सर्व-कालदि ।
श्रीत-रुणि व -- ल्लभ र-थिकनें -- दरिदु- नित्यद-लि ॥
प्रीति-यिंदलि -- पॊषि-सुत वा- ।
तात-पादिग -- ळिंद-लविरत ।
ई त-नुविनोळु -- ममते- बिट्टव -- नवने- महयॊ-गि ॥
५...२५ ॥

दॆह धारक/इन्द्रिय/मनस्/प्रपन्च: [बृ.उप, अव्याकृत ब्राह्मण]

पाद-मानि ज -- यंत-नोळगे सु- ।
मॆध- नामक -- निप्प- दक्षिण- ।
पाद-दंगुट -- दल्लि- पवननु -- भार-भृद्रू-प ॥
कादु-कॊंडिह -- टंकि-तर मोद- ।
लाद- नामदि -- संधि-गळली- ।
रैदु- रूपद -- लिद्दु- संतत -- नडेदु- नडेसुत-लि ॥ ८...१ ॥

|| स्नान ||

अंगु-टाग्रदि -- जनिसि-दमरत- ।
रंगि-णियु लॊ -- कत्र-यगळघ ।
हिंगि-सुवळ -- व्याकृ-ताका -- शांत- व्यापिसि-द ॥
इंग-डल मग -- ळॊडेय-नंगॊ- ।
पांग-गळलि -- प्प मल-नंत सु- ।
मंग-ळ प्रद -- नाम- पावन -- माळ्पु-दॆनरि-दु ॥२..२० ॥

वस्त्र धारण [सामोपासन, छन्दोग्य]

वासु-दॆवनु -- करेसु-वनु का- ।
र्पास- नामदि -- संक-रुषणनु ।
वास-वागिह -- तूल-दोळु तं -- तुगनु- प्रद्यु-म्न ॥
वास-रूपनि -- रुद्ध- दॆवनु ।

भूष-णनु ता -- नागि- तॊर्प प- ।
रॆश- नारा -- यणनु- सर्वद -- मान्य- मानद-नु ॥ १५..२८ ॥

ललने-यिंदोड -- गूडि- चैलग- ।
ळोळगे- ऒत -- प्रॊत- रूपदि ।
नेलेसि-हनु चतु -- रात्म-क जग -- न्नाथ-विठ्ठल-नु ॥
छळि बि-सिलु मळे -- गाळि-यिंदरे- ।
घळिगे- बिडदले -- काव-नेंदरि- ।
दिळेयो-ळर्चिसु -- तिरु स-दा स -- र्वांत-रात्मक-न ॥ १५..२९ ॥

<u>पूजा / बिम्बोपासन</u>

एरड-धिक ए -- प्पत्ते-निप सा- ।
विरद- नाडिगे -- मुख्य- ऎकॊ- ।
त्तरश-तगळ -- ल्लिहवु- नूरा -- वोंदु- मूर्तिग-ळु ॥
अरितु- दॆहदि -- कलश- नामक - ।
हरिगे- कळेगळि -- वेंदु- नैरं- ।
तरदि- पूजिसु -- तिहरु- परमा -- दरदि- भूसुर-रु ॥ ८..१८ ॥

वारि-ज भवां -- डवे सु-मंटप ।
मॆरु-गिरि सिं -- हास-नवु भा- ।
गीर-थिये म -- ज्जनवु- दिग्व -- स्त्रगळु- नुडि मं-त्र ॥
भूरु-हज फल -- पुष्प- गंध स- ।
मीर- शशिरवि -- दीप- भूषण ।
तार-केगळें -- दर्पि-सलु कै -- कोंडु- मन्निसु-व ॥ ५...२८ ॥

पाप- कर्मवु -- पादु-केगळनु- ।
लॆप-नवु स -- त्पुण्य- शास्त्रा- ।
लाप-नवे श्री -- तुळसि- सुमनॊ -- वृत्ति-गळे सुम-न ॥
कॊप- धूपवु -- भक्ति- भूषण ।
व्यापि-सिद स -- द्भुद्धि- छत्रवु ।
दीप-वॆ सु -- ज्ञान- आरा -- र्तिगळे- गुणकथ-न ॥ ५..१५ ॥

मनदो-ळगे सुं -- दर प-दार्थव ।
नेनेदु- कोडे कै -- कोंडु- बलु नू- ।
तन सु-शॊभित -- गंध- सुरसॊ -- पॆत- फलरा-शि ॥
द्युनदि- निवहग -- ळंते- कोट्टव- ।
रनु स-दा सं -- तैसु-वनु स- ।
द्गुणव- कद्दव -- रघव- कदिवनु -- अनघ-नेंदेनि-सि ॥
२...२२ ॥

<u>विप्र नमस्कार [ऐतरेय]</u>

नूरु- वरुषके -- दिवस- मूव- ।
त्तारु- साविर -- वहवु- नाडि श- ।
रीर-दोळगिनि -- तिहवु- एंदरि -- तोंदु- दिवसद-लि ॥
सूरि-गळ स -- त्करिसि-दव प्रति- ।
वार-दलि दं -- पतिग-ळर्चने ।
ता र-चिसिदव -- सत्य- संशय -- विल्ल-वेंदें-दु ॥ १२...४ ॥

भोजन यज्ञ [ऐतरेय]

निरुप-मानं -- दात्म-हरि सं- ।
करुष-ण प्र -- द्युम्न- रूपदि ।
इरुति-हनु भॊ -- क्तृगळो-ळगे त -- च्छक्ति-दनु एनि-सि ॥
करेसु-वनु ना -- राय-णनिरु- ।
द्धेरडु- नामदि -- भॊज्य- वस्तुग ।
निरुत- तर्पक -- नागि- तृप्तिय -- नीव- चॆतन-के ॥ ४...८ ॥

एल्ल क्रियेयल्लि चिन्तने

यत्र यत्र गतिर् मम ईश्वर तत्र तत्र ते अस्तु तव पदाम्बुजम्
आ.र.र.- १

मक्क-ळाडिसु -- वाग- मडदियो- । ळक्क-रदि नलि -- वाग-
हय प- । ल्लक्कि- गज मोद -- लाद- वाहन -- वॆरि-
मेरेवा-ग ॥
बिक्कु-वागा -- कळिसु-तलि दॆ । वक्कि- तनयन स्मरिसु-तिह
नर ।
सिक्क- यमदू--तरिगे-आवा--वल्लि - नॊडिद-रु ॥

..नामस्मरण सन्धि - १ ॥

दामॊ- । दरगे- साष्टां -- ग प्र-णामग -- ळॆ सु-शयनग-ळु ॥
५...२२ ।
===